

## परिवर्तन की कहानी नीलम विश्वकर्मा की जुबानी



नमस्कार सभी को,

मेरा नाम नीलम विश्वकर्मा है। मैं सिवनी जिले में एक शासकीय विभाग में कार्यरत हूँ। राज्य आनंद संस्थान के कार्यक्रम 'अल्पविराम' से जुड़ने से पहले मैं अपने जीवन में घटित होने वाली सभी घटना के लिए दूसरों को जिम्मेदार मानती थी। मेरी खुशियां बाहरी परिस्थिति और भौतिक वस्तुओं पर निर्भर करती थी। हमेशा यही सोचती कि यदि पद, पैसा, प्रतिष्ठा है तो ही हम खुश हैं, वरना तो हम दुखी हैं। इन सभी विचारों की वजह से मेरे अंदर एक नकारात्मक उर्जा बनी रहती थी।

एक घटना के बारे में मैं बताती हूँ, वर्ष 2014 में मैं जहां नौकरी करती थी, एक फाइल मेरी बॉस के पास गई जिसमें कुछ राशि भुगतान करने की थी। जैसे ही मेरी बॉस ने आदेश में हस्ताक्षर किये उन्होंने देखा कि प्रतिलिपि में उनके पहले से ही स्कैन साइन थे। यह देखकर वह बहुत नाराज हुईं और उन्होंने मुझे बहुत डांटा। इसके बाद उन्होंने मुझे नोटिस दिया, जिस पर मैंने जवाब दिया कि इस प्रकरण में मेरी कहीं कोई गलती नहीं है आप चाहे तो जांच करवा लें और ऑपरेटर से पूछ लें। इस पर उन्होंने कहा कि ऑपरेटर वही करता है जो उससे कहा जाता है, जबकि ऑपरेटर ने स्वीकारा कि इस सब की जानकारी मैडम (यानि मुझे) को नहीं है। पूर्व माह में बैंक लिस्ट जानी थी, जिस पर विभाग प्रमुख के हस्ताक्षर चाहिये, किन्तु वे कार्यालय में नहीं थीं इसलिये उसने उनके हस्ताक्षर स्कैन कर भेज दिये और इस माह वहीं से कॉपी पेस्ट किया अतः स्कैन साइन है। मैडम की कोई गलती नहीं है। उसने जब ये सारी बातें मेरी बॉस से बताया तो वे काफी नाराज हुईं और मैंने भी उनसे बहस कर ली, उस समय ऑफिस में काफी लोग थे। इसके बाद वित्तीय अनियमितता का प्रकरण बनाते हुये मुख्यालय पत्र भेजा गया, जिस पर मेरी सेवा समाप्ति कर दी गई। मैंने सभी से आवेदन, निवेदन किया पर कुछ नहीं हुआ।

आखिर मैंने माननीय उच्च न्यायालय की शरण ली, जहां से मुझे स्टे मिल गया। जब मैं ऑफिस ज्वाइन करने वाली थी, तभी मेरी एफ.आई.आर. कर दी गई और मुझे फिर से बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ा। सिविल कोर्ट में अग्रिम जमानत के लिये कोशिश की पर मुझे जमानत नहीं मिली। पुनः उच्च न्यायालय जाना पड़ा जहाँ मुझे अग्रिम जमानत मिली। करीब 1 महीने के बाद मैंने कार्यालय में ज्वाइनिंग दी। इन सबके बीच मैं और मेरा परिवार बहुत परेशान रहा। घर से दूर होने से मेरी बेटियां भी बहुत परेशान थी। अंत में दोनों फेस में

मेरी जीत हुई। ईश्वर की कृपा से सब ठीक हुआ।

अब जब मैं अल्पविराम कार्यक्रम से जुड़ी तो मुझे एहसास हुआ कि शायद ये मामला इतना नहीं बढ़ता, यदि मैंने उस समय बहस नहीं की होती, शांति से बात की जा सकती थी, क्योंकि पूरे प्रकरण में मेरी कोई गलती न होने के कारण भी इतना परेशान हुई। इसके बाद मैंने अपने बॉस से, जो इस समय प्रमोशन होकर अन्य जिले में हैं, उनको मैसेज किया कि वे अपने मन में मेरे लिये कोई कड़वाहट न रखें, मैंने अपने मन में आपके लिए कोई कड़वाहट नहीं रखी है। उस घटना के समय मेरे साथ बहुत गलत हुआ, पर मुझे भी अपना गुस्सा कंट्रोल में रखना था। सभी के सामने आपसे इस तरीके का व्यवहार नहीं करना था। उनका कोई जवाब तो नहीं आया पर मेरे मन में अब एक शांति है, सुकून है।

अब हर पल यह अनुभव करती हूँ कि मेरे जीवन का आनंद मेरे भीतर पैदा होता है। यदि मैं बाहरी परिस्थिति से हिल जाती हूँ तो यह गलत है मुझे हर पल आनंदित रहना है। यह सब तो आता-जाता है, पर ईश्वर ने हमें जो जीवन दिया है वह बहुत महत्वपूर्ण है, जिसके लिये मैं ईश्वर की शुक्रगुजार हूँ। अल्पविराम कार्यक्रम के माध्यम से मैंने स्वीकार किया कि जो जैसा है, उसे वैसा ही स्वीकार करना है। मुझे बदलाव नहीं करना है, यदि बदलाव करना है तो स्वयं में करना है। जब मैं आनंदित रहती हूँ तो मैं यह पाती हूँ कि मैं सामने वाले की अच्छाई देख पाती हूँ, मुझमें यह स्वीकार भाव आ जाता है कि वह जो कर रहा है यह उसकी इच्छा है, जैसे मैं हर समय अपनी इच्छा के अनुसार करती हूँ, वैसे ही सामने वाला व्यक्ति भी, इसके लिये मैं उनसे नाराज नहीं होती, बस वैसे ही स्वीकार कर लेती हूँ।